जीवन की अनित्यता का अनुचिंतन करें

-युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 13 फरवरी 09-

आचार्य महाप्रज्ञ के उ□ाराधिकारी शिष्य युवाचार्य महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथ भवन में स्थित श्रीमद् मघवा समवसरण में दैनिक प्रवचन के दौरान धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि संसार में चौरासी लाख योनियां है। जीव अपने-अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न गतियों में भ्रमण करता है। ऐसा कतई नहीं हो सकता कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु नहीं हो। मृत्यु निश्चित है। जीवन क्रम को बढ़ाया नहीं जा सकता। देहधारी की मृत्यु होनी ही है लेकिन यह कहा नहीं जा सकता कि वह कब, कैसे और कहां दस्तक दे। इसलिए मनुष्य को अगली दुनियां के लिए योग्य पाथेय की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

युवामनीषी ने आगे कहा-प्रतिदिन सुर्योदय होता है और अस्त होते-होते वह अपने साथ जीवन का एक टुकड़ा ले जाता है। इसीलिए मनुष्य को जीवन की अनित्यता का चिंतन करते हुए जागरूकता से हर क्षण को जीना चाहिए। जीवन की अस्थिरता अप्रमाद की तरफ ले जाने का संदेश देती है। उनका मानना है कि आचार व्यवहार में निर्मलता और विचार में पवित्रता जीवन को स्वस्थ बनाता है। जिन्हें शांति से जीवन बसर करना है उन्हें समय प्रबंधन, नशामुक्ति, इंदिय संयम, अहिंसा और इमानदारी का पाथेय अपने साथ ले लेना चाहिए ताकि दुर्गति में जाने से बचा जा सके। साथ ही उन्होंने आगे कहा कि जीवन एक यात्रा है इस यात्रा में कई ऐसे मोड़ आते है जब कोई घटना जिन्दगी को राग से विराग की तरफ ले जा सकती है। बशर्तें उनसे सीख लेने और खुद को संभालने की कोशिश की जाये। जो आदमी जीवन की अनित्यता को जान लेता है वह राग द्वेष की घटनाओं से प्रभावित हुए बिना विराग के संसार में जीकर शाश्वत सुख की तरफ कदम बढ़ा लेता है। आना जाना दुनियां की एक शाश्वत परम्परा है। यहां किसी की आंख खुलती है तो कोई आंख मूंद लेता है, लेकिन जाने वाले संसार के लिए एक संदेश छोड़ जाते है कि इस दुनियां में राजा हो या रंक कोई भी अमर नहीं रहा। जो जन्मा है उसे मौत के मुंह में जाना ही होगा। कुछ ऐसे अच्छे कर्म कर लेने चाहिए कि दुनियां का साथ छोड़ते हुए आंखों में आंसू ना हो क्योंकि अच्छाई और बुराई ही हमेशा आत्मा का साथ निभाती है।

मुनिसुव्रत ने अपनी जन्मभूमि बीदासर से बोरावड़ की तरफ विहार करने से पूर्व कार्यक्रम में भावपूर्ण विचारों की प्रस्तुति दी। उन्होंने अपने सहयोगी मुनि मंगलप्रकाश के साथ ''गुरुवर थांरी कृपा दृष्टि रो पार ना पावां हां..... गीत प्रस्तुत किया तो पूरा पांडाल भावविभोर हो उठा।

छापर सेवा केन्द्र में वर्षभर सेवा देकर आये मुनि कमलकुमार ने अपने श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। सूरजमल नाहटा ने सेवाकेन्द्र में वृद्धमुनियों की प्रसंशा करते हुए आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। मंच संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

नोट :- उपरोक्त समाचार की फोटो ई-मेल द्वारा प्रेषित की जा चुकी है।